देवर्षि नारदकी दृष्टि में धर्म का स्वरूप

डॉ0 सन्तोष कुमार पाण्डेय

भारत एक धर्म प्रधान देश है। यह अनादि काल से अनन्त एवं गम्भीर चर्तुदश विद्याओं से पल्लवित एवं पुष्पित होता चला आ रहा है। इन चतुर्दश विद्याओं (चार वेद, न्याय, मीमांसा, पुराण, धर्मशास्त्र–छः वेदांग) को धर्मशास्त्र का मूल कहा जाता है। धर्म ही अर्थ और काम का प्रेरक है। जो मनुष्य को न्यायपूर्वक जीवन निर्वाह करने को प्रेरित करे वहीं धर्म है। धर्म के विषय में अनेक पौराणिक महर्षियों ने अपना–अपना मत प्रस्तुत किया है। इनमें देवर्षि नारद का विशिष्ट स्थान है। इनकें धार्मिक उपदेश श्रीमद्भागवत–महापुराण, पद्मपुराण आदि में मिलते हैं।